दक्षिण एशिया में जेंडर समानता के लिये कमला भसीन पुरस्कार

यह पुरस्कार हर साल दक्षिण एशिया के दो व्यक्तियों को सम्मानित करता है:

- दक्षिण एशिया में उन महिलाओं को सम्मानित करने के लिये पुरस्कार जो गैर-पारंपरिक तरीकों से जीविकोपार्जन करती हैं
- जेंडर समानता की दिशा में काम करने वाले पुरुषों को सम्मानित करने के लिये पुरस्कार

पुरस्कार की दोनों श्रेणियों में सिस और ट्रांस पुरुष और महिलाएं शामिल हैं।

पुरस्कार में शामिल है:
एक ट्रॉफी के साथ एक लाख भारतीय रुपये की पुरस्कार राशि।

यह पुरस्कार विजेताओं के लिये साथ मिलकर सीखने और दक्षिण एशिया में बदलाव के लिए काम कर रहे व्यक्तियों, संगठनो और डोनर्स के साथ जुड़ने और नेटवर्क बनाने का एक शानदार अवसर है।

कौन आवेदन कर सकते हैं?

हम अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका के दक्षिण एशियाई नागरिकों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित करते हैं जो दक्षिण एशिया के किसी भी देश में रह रहे हैं और काम कर रहे हैं।

आवेदन आठ देशों की सभी आधिकारिक भाषाओं में स्वीकार किये जाएंगे।

पुरस्कार की श्रेणियाँ

1. गैर-पारंपरिक आजीविका (NTL - एनटीएल) की (सिस (जन्म से) /ट्रांस) महिला प्रैक्टिश्नर।
2. (सिस (जन्म से)/ट्रांस) पुरुष जिसने लड़कों/पुरुषों के साथ काम करके जेंडर-न्यायपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र (इको सिस्टम) को सक्षम करने की दिशा में काम किया है।

चयन के मानदंड

पहली श्रेणी

- पिछले 3 वर्षों से अपने संदर्भ में गैर-पारंपरिक आजीविका का अभ्यास कर रही हैं
- न केवल अपनी कमाई, बल्कि अपने जीवन पर भी नियंत्रण पाने के लिये खुद को सशक्त बनाया है।
- एक परिवर्तन एजेंट हैं और दूसरों के लिये अवसर पैदा करती हैं।

गैर-पारंपरिक आजीविका के तरीके वे हैं जो महिलाओं के इर्द-गिर्द उनकी उन्नति को रोकने के लिये स्थापित की गई बाधाओं और दीवारों को तोड़ देते हैं जो उनकी एक निश्चित जाति, समुदाय या धार्मिक समूह से होने के कारण होती हैं, या उनके यौन रुझान, जेंडर पहचान, विकलांगता के कारण होती हैं, या वे कहाँ रहती हैं इस कारण होती हैं। प्रत्येक समाज में भेदभाव प्रणालियों के आधार पर इन कारणों की सूची लंबी और भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिये, अवैतनिक काम और गतिशीलता से संबंधित जेंडर मानदंड एक कारण हैं जिसकी वजह से महिलाओं को ड्राइविंग या राजमिस्त्री जैसे व्यवसायों को करने की अनुमति नहीं मिलती है कि क्यूंकी इसके लिये उन्हें दिन-रात घर से दूर रहने की आवश्यकता होती है।.

आप यहाँ क्लिक करके गैर-पारंपरिक आजीविकाओं और क्षेत्र के आसपास कुछ उदाहरणों के बारे में अधिक पढ़ सकते हैं।

दूसरी श्रेणी

- पिछले 5 वर्षों से जेंडर-न्यायपूर्ण दुनिया की दिशा में पुरुषों / लड़कों के साथ काम कर रहे हैं।
- देखभाल कार्य में योगदान देकर, महिलाओं के नेतृत्व को स्वीकार करके, जेंडर आधारित हिंसा के सभी रूपों और जेंडर आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों का मुकाबला करके व्यक्तिगत और कामकाजी जीवन में हानिकारक पुरुषत्व का मुकाबला कर रहे हैं।
- एक परिवर्तन एजेंट हैं और उन्होंने जेंडर आधारित दुनिया को सक्षम बनाने के लिये अन्य पुरुषों को प्रभावित किया है।

जेंडर समानता को बढ़ावा देने में लड़कों और पुरुषों को शामिल करने की आंदोलन बढ़ रहा है। कमला का नारा, "उच्च गुणवत्ता वाले पुरुष समानता से नहीं डरते हैं", पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने वाले पुरुषों के महत्व पर प्रकाश डालता है। इस श्रेणी का उद्देश्य ऐसे पुरुषों को सम्मानित करना है जिन्होंने अपने जीवन में देखा है कि पितृसत्ता ने उनके जीवन को कैसे प्रभावित किया है और, अपने विशेषाधिकारों को स्वीकार किया है और पितृसत्ता की बाधाओं को पहचाना है। हम ऐसे पुरुषों की तलाश करते हैं जो हानिकारक प्रथाओं का सामना करने, महिलाओं और यौन अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा का विरोध करने, घरेलू देखभाल कार्य की ज़िम्मेदारी साझा करने और महिलाओं और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को उनके अधिकारों का दावा करने में समर्थन करने के लिये अन्य पुरुषों के साथ सक्रिय रूप से काम करते हैं। हमारा लक्ष्य इन परिवर्तन एजेंटों के लिये एक-दूसरे से सीखने और जेंडर समानता की पैरवी करने के लिये दूसरों को प्रेरित करने के लिये सहायक वातावरण तैयार करना है।

समयावधि

8 मार्च, 2024: आवेदन प्रक्रिया शुरू
7 जून, 2024: आवेदन प्रक्रिया समाप्त
जुलाई-अगस्त 2024: उम्मीदवारों की सूची तैयार करना और साक्षात्कार
सितंबर 2024: विजेताओं की घोषणा
30 नवंबर: नई दिल्ली में पुरस्कार समारोह

पुरस्कार के बारे में

यह पुरस्कार दक्षिण एशिया में नारीवादी आंदोलनों की प्रतीक कमला भसीन की स्मृति में है। वे आजीविका के गैर-पारंपरिक स्रोतों में संलग्न महिलाओं की प्रबल समर्थक थीं। कमला ने जेंडर समानता की दिशा में पुरुषों के साथ जुड़ने की आवश्यकता की भी पैरवी की और लोकप्रिय नारा दिया "उच्च गुणवत्ता वाले पुरुष समानता से नहीं डरते हैं"।

जूरी के सदस्य

अनु आगा (भारत), बिंदा पांडे (नेपाल), ख़ुशी कबीर (बांग्लादेश), मुनीज़ जहांगीर (पाकिस्तान), नमिता भंडारे (भारत), राधिका कुमारस्वामी-अध्यक्ष (श्रीलंका)

पुरस्कार सहयोगी

आज़ाद फाउंडेशन, आईपार्टनर इंडिया, नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया

पुरस्कार के बारे में अधिक जानकारी के लिये कृपया www.kamlabhasinawards.org पर जाएं

Azad Foundation   PARTNER INDIA   भारतीय प्रतिष्ठान NATIONAL FOUNDATION FOR INDIA